Exam. Code : 216304
Subject Code : 5084

M.A. (Hindi) 4th Semester

MADHYAKALIN HINDI KAVYA

Paper—XVI

Time Allowed—2 Hours] [Maximum Marks—80

नोट :— कोई **चार** प्रश्न करें। सभी प्रश्नों के समान अंक हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) श्रीरामचंद्र कृपाल भजु मन हरन भवभयदारुनं।
नवकंजलोचन कंजमुख करकंज पदकंजारुनं॥
कंदर्प अगनित अमित छवि नवनीलनीरदसुंदरं।
पटपीतमानहुँ तड़ित रुचि सुचि नौमि जनक-सुता-वरं॥

(ख) अब तो मेरा राम नाम, दूसरा न कोई।
माता छोड़ी, पिता छोड़े, छोड़े सगा भाई।
साधु संग बैठ बैठ, लोकलाज खोई।
संत देख दौड़ आई, जगत देख रोई।
प्रेम आँसू डार-डार, अमर बेल बोई॥

(ग) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाई परैं, श्याम हरित-दुति होई॥
कीनैं हूँ कोहिक जतन अब कहि काढै कौनु।
मो मन मोहन-रूपु मिलि पानी मैं कौ लौनु॥

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) भरत बिमल जसु बिमल बिधु सुमति चकोर कुमारि।
उचित बिमल जन हृदय नभ एकटक रही निहारि॥
भरत सुभाउ न सुगम निगमहूँ। लघु मति चापलता कबि छमहूँ॥
कहत सुनत सति भाउ भरत कौ। सीच राम पद होइ न रत को॥

(ख) अब नहिं जाने दूँ गिरधारी,
(मौहे) प्रीत लगी अति भारी।
बाँको मुकट काछनी सुन्दर, ऊपर जरद किनारी।
गल मुतियन की माल बिराजे कुंडल की छबि न्यारी॥
जपमाला, छापैं, तिलक सरै न एकौ कामु।
मन-काँचे नाचैं वृथा, साँचे राँचे रामु।
कनकु कनक तैं सौगुनौ मादकता अधिकाइ।
उहिं खाऐं बौराइ नर, इहिं पाऐं बौराइ॥

3. तुलसी काव्य में समन्वय भावना को विवेचित कीजिए।
4. तुलसीदास के दार्शनिक सिद्धांतों पर प्रकाश डालिए।
5. मीराबाई के काव्य में भक्ति के स्वरूप को रेखांकित कीजिए।
6. हिंदी कृष्ण काव्य परम्परा में मीराबाई का स्थान निर्धारित कीजिए।
7. बिहारी सतसई के मूल प्रतिपाद्य का स्वरूपांकन कीजिए।
8. बिहारी और उनके काव्य का परिचय देते हुए उसकी प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।